

जंगली पशु 3. गोमय 4. मेष, वृष, सिंह राशियाँ
5. बिना बोए उत्पन्न होने वाला अन्न।

आरण्यक वि. (तत्.) जंगल का, वन में उत्पन्न, वन्य पुं. 1. ब्राह्मणग्रंथों से संबंधित धार्मिक तथा दार्शनिक ग्रंथ जिनकी रचना तथा पठन-पाठन का कार्य जंगल के आश्रमों में होता था 2. वेदों का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण है 3. वनवासी।

आरण्यक संवाद पुं. (तत्.) आरण्यक ग्रंथों में व्यक्त ज्ञान, अरण्य में उपलब्ध तत्व ज्ञान।

आरण्यकांड पुं. (तत्.) रामायण का तृतीय कांड। अरण्यकांड।

आरण्यकुक्कुट पुं. (तत्.) जंगली मुर्गा, बनमुर्गी।

आरण्यगान पुं. (तत्.) सामवेद का गान।

आरण्य-पशु पुं. (तत्.) जंगली पशु, वन्य पशु।

आरत वि. (तद्.) दे. आर्त।

आरतपाल वि. (तद्.) आर्तों का रक्षक, बेकसों का सहारा, पतित पावन।

आरतबंत वि. (तद्.) आर्त, दीन, दुःखी, बेबस, व्यथित, पतित।

आरता पुं. (तद्.) वैवाहिक आयोजन में वर की आरती, बड़े मंदिरों में आरती उतारने के बड़े थाल, जिनमें, जलाने के लिए 21 अथवा 51 बत्तियाँ सजाई जाती हैं।

आरति स्त्री. (तत्.) 1. विरक्ति 2. दुःख 3. दीनता या व्याकुलता।

आरति भंजन वि. (तद्.) व्यथा, दीनता/दुःख आदि दूर करने वाला, विपदा निवारक, दुःख भंजक।

आरती स्त्री. (तत्.) 1. देवता की मूर्ति या अभिनंदनीय व्यक्ति के सम्मुख बाएँ ऊपर, दाहिने और नीचे इस प्रकार चारों ओर दीपक घुमाना 2. पूजा के समय देवता के समक्ष पढ़ा जानेवाला स्तोत्र 3. वह पात्र जिसमें घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है मुहा. आरती उतारना- अभिनंदन करना, पूजा करना; आरती

लेना- देवता की आरती हो चुकने पर उपस्थित लोगों का उस दीपक के ऊपर हाथ फेर कर माथे पर लगाना।

आरपार पुं. (तत्.) नदी के दोनों छोर प्रयो. यहाँ से देखने पर नदी का आरपार दिखाई नहीं देता, इस तरफ से उस तरफ तक, यहाँ से वहाँ तक।

आरब्ध वि. (तत्.) आरंभ किया हुआ पुं. आरंभ।

आरब्धि स्त्री. (तत्.) शुरुआत, आरंभ।

आरभट पुं. (तत्.) 1. साहस, बहादुरी 2. विश्वास 3. साहसी पुरुष।

आरभटी पुं. (तत्.) 1. क्रोधादि उग्र भावों की चेष्टा 2. एक प्रकार की नृत्य-शैली 3. नाटक (साहित्य) एक वृत्ति का नाम जो रौद्र, भयानक और वीर रसों के वर्णन में प्रयुक्त होती है।

आरभटी वृत्ति स्त्री. (तत्.) 1. आचार्य भरत द्वारा वर्णित चार नाट्य वृत्तियाँ (कैशिकी, सात्वती, आरभटी, भारती) में से एक वृत्ति, इस वृत्ति में माया, छल, कपट, इंद्रजाल, क्रोध अभिमान आदि का संयोजन होता है 2. रंगमंच पर वीभत्स और अलौकिक घटनाएँ दिखाने की वृत्ति।

आरमण पुं. (तत्.) 1. आनंद लेना 2. विराम 3. विश्राम करने का स्थान।

आरव पुं. (तत्.) 1. चिल्लाहट, आवाज, कर्कश ध्वनि 2. कुत्तों, भेड़ियों आदि का भौंकना।

आरसा पुं. (देश.) 1. कार्य करने में सुस्ती, काहिली, आलस्य 2. स्त्री. आरसी, दर्पण, आईना।

आरसी पुं. (तद्.) 1. शीशा, आईना, दर्पण 2. आईना जड़ा छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।

आरस्य पुं. (तत्.) रसहीनता, नीरसता, शुष्कता।

आरा पुं. (फा.) लकड़ी चीरने का लोहे का दाँतीदार औज़ार पुं. (तत्) पहिए की गरारी और पुट्टी के बीच की पटरी 2. चमड़ा सीने का सूजा।